JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

तुलसी काव्य में दास्य भाव

Author - Niharika Kunwar,
Ph.D Scholar Shri JJT University Jhunjhunu, Rajasthan

हिंदी साहित्य में प्रख्यात कवि गोस्वामी तुलसीदास का नाम बहुत ही सम्मान पूर्वक लिया जाता है।तुलसीदास भक्तिकाल की सगुण धारा की राम भक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि रहे हैं। राम काव्य धारा के प्रमुख कवियों में जितना उत्कर्ष तुलसीदास द्वारा हुआ उतना अन्य कवियों द्वारा नहीं। अपनी लेखनी के द्वारा गोस्वामी जी ने जनमानस तक संस्कृति व आदर्शों के अर्थ व महत्व को बताते हुए एक सभ्य व स्वस्थय समाज की नींव रखी। तुलसीदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की सगुण काव्य धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि रहे हैं। उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम राम का अनन्य भक्त माना जाता है। राम भक्ति ही तुलसीदास के जीवन का मुख्य ध्येय था।

प्राचीन शास्त्रों में भक्ति के 9 प्रकारों को उल्लेखित किया गया है, जिसे नवधा भक्ति की संज्ञा दी जाती है। जो निम्न है-

श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य, आत्मनिवेदन।

तुलसीदास के काव्य में नवधा भक्ति के सभी रूप मिलते हैं परंतु उनकी भक्ति का मूल आधार दास्य भाव था।

गोस्वामी जी की दास्य भावना का एक उत्कृष्ट उदाहरण रामचरितमानस के प्रारंभ में देखने को मिलता है, जहाँ तुलसीदास लिखते हैं-

"कबित बिबेक एक नहिं मोरे। सत्य कहउँ लिखि कागद कोरे।।" (1)

रामचरितमानस विश्व जगत का सुप्रसिद्ध महाकाव्य है जिसके जितनी सुप्रसिद्धि किसी अन्य काव्य को नहीं मिली है। इतने बड़े महाकाव्य के रचयिता होने के उपरांत भी तुलसीदास का इस प्रकार लिखना कि "काव्य लेखन का एक भी गुण मेरे भीतर नहीं है" उनकी दास्य भावना की पराकाष्ठा को परिलक्षित करता है।

विनय पत्रिका में भी गोस्वामी जी की दास्य भावना कई स्थान पर झलकती है। भक्ति का मूल अर्थ भावना में निहित होता है। इसी भावना से दास्य भक्ति की अनुभूति होती है। दास्य भावना की इसी अनुभूति को विनय पत्रिका में तुलसीदास ने एक स्थान पर बड़ी सरलता के साथ इस प्रकार लिखा है-

"राम सों बड़ो है कौन, मो-सों कौन छोटो ?
राम सों खरो है कौन, मो-सों कौन खोटो ?" (2)

इसी प्रकार भक्ति की भावना से जब तुलसीदास अपने इष्ट श्री राम से कृपा की प्रार्थना करते हैं तब उनकी इस प्रार्थना में एक दैन्य दास की प्रार्थना के शब्द सम्मिलित होते हैं-

"कहाँ जाऊँ, कासों कहो, को सुनै दीन की।
त्रिभुवन तु ही गति सब अंगहीन की ।।" (3)

उपरोक्त दोहे में तुलसीदास अपने इष्ट श्री राम से कह रहे हैं कि मुझ दीन की कौन सुनेगा ? किससे कहूँगा और कहाँ जाऊँगा ? इस पूरे त्रिलोक में दीनों का एक तू ही आश्रयदाता है।

भारतीय संस्कृति के अंतर्गत भक्ति भावना का सदैव ही एक विशेष महत्व रहा है। मनुष्य ने सदैव ही अलौकिक जगत में अपनी श्रद्धा रखी है ,परंतु तुलसीदास के तत्कालीन समाज में अनेकों विसंगतियों व कुप्रथाओं ने जन्म ले लिया था। सामाजिक बंधनों का पतन हो रहा था ।भारतीय संस्कृति को जीवंत बनाए रखने के लिए तुलसीदास ने अपनी लेखनी के द्वारा समाज को संस्कृति व मूल कर्तव्यों के महत्व से अवगत कराया और एक सभ्य समाज की स्थापना की नींव रखी। तुलसीदास मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम को अपना आराध्य मानकर दास्य भाव की भक्ति में लीन हो गए। दास्य भाव की भक्ति के कारण ही तुलसीदास ने जो कुछ भी लिखा वह प्रभु की कृपा से अनुपम व अद्वितीय काव्य बन गया। तुलसीदास की समस्त रचनाएं ही दास्य भाव की भक्ति से ओतप्रोत नज़र आती है।

अपने प्रभु श्री राम के परम भक्त हनुमान जी की स्तुति करते हुए भी तुलसीदास जी ने भारत वर्ष की सुप्रसिद्ध चालीसा हनुमान चालीसा की रचना की। इस रचना में भी हनुमान से प्रार्थना करते समय तुलसीदास सर्वप्रथम जो वंदना करते हैं उसमें भी उनकी दास्य भावना झलकती है-

"श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधारि।
बरनऊं रघुवर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरो पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार।" (4)

प्रस्तुत चौपाई में तुलसीदास श्री गुरु के कमल रूपी चरणों की धूल से अपने मन के समान दर्पण को निर्मल करके श्री राम की अद्वितीय कीर्ति का वर्णन करते हैं। जो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष फल को प्रदान करने वाले हैं। तुलसीदास हनुमान जी से विनती करते हुए कहते हैं कि हे पवन कुमार! मैं आपको सुमिरन करता हूँ। आप तो सर्वज्ञानी हैं तथा आपको विदित ही है कि मैं बुद्धि और काया से निर्बल हूँ। मुझ पर कृपा करके शारीरिक बल एवं ज्ञान दीजिए और मेरे सारे दोषों को नष्ट कर दीजिए।

तुलसीदास की सम्पूर्ण रचनाओं में दास्य भाव की भक्ति की प्रधानता प्रकट होती है। दास्य भाव की भक्ति के लिए अपने आराध्य के प्रति बिना किसी संशय के हृदय में आत्मसमर्पण तथा अनन्य भावना का भाव होना चाहिए, जो कि तुलसीदास में पूर्ण रूप से विद्यमान था। तुलसी ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की अनन्य भक्ति करते हुए, उन्हें सर्वोपरि तथा स्वयं को दीन बताया है। तुलसीदास की दास्य भावना का एक सुंदर रूप उनकी रचना विनयावाली में भी देखने को मिलता है-

"तू दयालु, दीन हौं, तू दानि, हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप-पुंज-हारी।।
नाथ तू अनाथको, अनाथ कौन मोसो।
मो समान आरत नहिं, आरति हर तो सो।।" (5)

प्रस्तुत पंक्ति में तुलसीदास अपने इष्ट के चरण कमलों में प्रणाम करते हुए प्रभु से निवेदन करते हैं कि हे प्रभु! आप बड़े ही दयालु हैं और मैं दीन हूँ। आप दाता हैं और मैं भिक्षुक। आप पाप-दोष को मिटाने वाले हैं और मैं पापी हूँ। आप अनाथों के नाथ हैं, दीनानाथ हैं तो कौन मुझ जैसा अनाथ होगा। आप सबके दुःखों का निवारण करने वाले हैं तो मुझ जैसा अन्य कोई दुखी भी नहीं है।

तुलसीदास की यह अद्वितीय दास्य भाव की भक्ति ही उनके काव्य को सम्पूर्ण विश्व जगत में तेजस्वी सूर्य के समान सदैव विद्यमान बनाए रखेगी। तुलसीदास कृत "कवितावली" हिंदू धर्म का एक सुप्रसिद्ध धार्मिक ग्रंथ है। यह तुलसी का चरित्रात्मक ग्रंथ है। इसे कवित्त रामायण भी कहा जाता है। इसमें रामचरितमानस की भाँति सात काण्ड हैं। कवितावली में एक स्थान पर तुलसीदास अपने जीवन की परिस्थिति का दास्य रूप में वर्णन करते हैं-

"जोग न बिरागु, जप, जाग, तप, त्यागु, ब्रत
तीरथ न धर्म जानौं, बेदबिधि किमि है।
तुलसी सो पोच न भयो है, नहि ह्वैहै कहूँ,
सोचै सब, याके अघ कैसे प्रभु छमिहै।।
मेरे तौ न डरु रघुबीर! सुनौ, साँची कहौं,
खल अनखैहैं तुम्हैं, सज्जन न गमिहैं।
भले सुकृतीके संग मोहि तुलाँ तौलिए तौ,
नाम के प्रसाद भारू मेरी ओर नमिहै।।" (6)

अर्थात तुलसीदास कहते हैं कि मुझे न तो योग का ज्ञान है, न जप, तप, त्याग, यज्ञ, व्रत, तीर्थ और न ही धर्म का ज्ञान है। मुझे तो इतना भी विदित नहीं कि इन महान वेदों का विधान कैसा है। तुलसी कहते हैं कि मुझ समान अधर्मी तो कोई अन्य नहीं होगा तथा सब यही विचार करते हैं कि भगवान इनके पापों को कैसे क्षमा करेंगे, परंतु हे प्रभु! श्रीराम मैं आपसे सत्य कहता हूँ कि मुझे किसी भी प्रकार का भय नहीं है। यदि आप कभी मुझे इन पापों के लिए क्षमा कर भी देंगे तो दुर्जन लोग अवश्य ही आपसे अप्रसन्न हो जाएंगे, परंतु सज्जन व्यक्तियों को इससे कोई आपत्ति नहीं होगी। यदि आप किसी महान पुण्यवान के साथ मेरा तुला भार करेंगे तो भी आपके नाम की कृपा से मेरा पलड़ा ही अधिक झुका रहेगा ।

रामचरितमानस को साहित्य जगत का प्रख्यात ग्रंथ माना जाता है। रामचरितमानस में चित्रित किए गए सभी पात्रों में दूसरों के प्रति आदर व सम्मान का भाव झलकता दिखलाई पड़ता है। श्री राम के साथ वनवास जाने की हठ कर रहे लक्ष्मण को जब राम जी अनेक प्रकार से उनके उत्तरदायित्व को समझाते हैं, तब लक्ष्मण व्याकुल होकर कहते हैं-

"नाथ! दास मैं स्वामि तुम्ह, तजहु तो कहा बसाइ।" (7)

अर्थात "लक्ष्मण के लिए तो राम ही पिता हैं, गुरु हैं।राम लक्ष्मण के निश्चल एवं पावन प्रेम से विवश होकर उनकी माता से आज्ञा माँगने के लिए प्रसन्नता के साथ जाते हैं। तब ऐसा प्रतीत होता है मानो अंधे ने आँखें प्राप्त कर ली हों और लक्ष्मण अपने प्राण से प्यारे भाई तथा माता सीता के साथ वन को प्रस्थान करने के लिए उत्सुक हो जाते हैं।"(8)

इस प्रकार दास्य भाव के साथ भ्रातृ आदर्श को बड़ी सुंदरता के साथ तुलसीदास ने परिलक्षित किया है।

रामचरितमानस के उत्तरकाण्ड में तुलसीदास ने अंतिम दोहे में दास्य भावना का एक अनुपम दृश्य प्रस्तुत करते हुए कहा है कि-

"मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुबीर।
अस बिचारि रघुबंस मनि हरहु बिषम भव भीर।।" (9)

अर्थात हे प्रभु! मुझ जैसा कोई दीन नहीं है तथा आपके समान दीनों का हित करने वाला कोई अन्य नहीं है। हे प्रभु! ऐसा विचार कीजिए जिससे मेरे जन्म-मृत्यु के भयावह दुःखों का नाश हो जाए।

निष्कर्ष -

गोस्वामी तुलसीदास का नाम सदैव ही साहित्य जगत में अजर अमर रहेगा। तुलसी साहित्य मानव को कर्तव्य पथ पर चलने तथा भक्ति भावना से जागृत कराने वाला अतुलनीय साहित्य सिद्ध हुआ है। तुलसी की दास्य भाव की भक्ति का सर्वाधिक रूप विनय पत्रिका में देखने को मिलता है। तुलसीदास का उद्देश्य साहित्य की रचना करना नहीं था वरन भक्ति के अर्थ व महत्व को प्रकट करते हुए, भक्ति का प्रचार- प्रसार कर, अपने भावों-विचारों को लोक कल्याण के लिए जन-जन तक पहुँचाना था। दास्य भाव की भक्ति को तुलसीदास ने अपने काव्य का केंद्र बिंदु बनाया है। तुलसीदास ने गुरु की महत्ता और समन्वयता के महत्व को उजागर किया। दास्य भाव की भक्ति द्वारा ही असत्य पर सत्य तथा अज्ञान पर ज्ञान की विजय दिखाई। इसलिए यह कहा जा सकता है कि तुलसीदास की अपने आराध्य राम जी के प्रति दृढ़ विश्वास तथा दास्य भाव की भक्ति साहित्य जगत में अन्यत्र देखने को नहीं मिलती।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1- रामचरितमानस- गोस्वामी तुलसीदास, बालकाण्ड चौ.9, पृ.12

2- विनयपत्रिका- गोस्वामी तुलसीदास, पद 72

3- विनयपत्रिका- गोस्वामी तुलसीदास, पद 179

4- हनुमान चालीसा- गोस्वामी तुलसीदास, दोहा. 1

5- विनयपत्रिका- गोस्वामी तुलसीदास, पद 79

6- कवितावली- गोस्वामी तुलसीदास, उत्तरकाण्ड पद 71

7- रामचरितमानस- गोस्वामी तुलसीदास, अयोध्याकाण्ड दोहा.71, पृ. 340

8- प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य, हरीश, अध्याय- अयोध्याकाण्ड, पृ.7

9- रामचरितमानस- गोस्वामी तुलसीदास, उत्तरकाण्ड दोहा.130क, पृ.908